EXECUTIVE SUMMARY:-

F: MH-20/304013/XII/14-15/CRO Date: [illegible] 2015

# पश्चिमी राजस्थान में प्रमुख उद्योग, व्यापार एवं दरतकार वर्ग की स्थिति का एक अध्ययन

## (19वीं सदी के विशेष संदर्भ में)

एक अमूर्त अतीत हमें विरासत में मिला है, जबकि हमारी स्वाभाविक जिज्ञासा उस अंधकार के भीतर आकारों और आकृतियों को खोजती रहती है। हम समय विशेष पर अपने ज्ञान और परिस्थितियों के माध्यम से अपनी ओर अपने परिवेश की व्यवस्था करते आये है। अन्य सभी कारकों के समान ही भौगोलिक परिस्थितियों ने मानव जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित किया है। मनुष्य के विचार राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतक और अन्य सभी संस्थाओं पर काफी हद तक स्थान विशेष के भौगोलिक परिवेश का प्रभाव दृष्टिगोच्चर होता है। मानवीय सभ्यता के निर्माण तथा विकास में पारिस्थितिकी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वर्तमान काल के इतिहास-लेखन में ऐतिहासिक घटनाओं के निर्माण में पारिस्थितिकी का अत्यधिक महत्त्व है। भौगोलिक स्थितियों, वातावरण, आर्थिक संसाधनों की संस्कृतियों तथा सभ्यताओं के निर्माण में प्रमुख भूमिका रही है। भौगोलिक परिस्थितियों ने मनुष्य के विचारों, राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थाओं पर बहुत-अंश तक प्रभाव डाला है, जो स्थानीय मानव के जीवन निर्माण को हर प्रकार से प्रभाति करती है। पश्चिमी राजस्थान के इतिहास निर्माण में यहाँ की शुष्क जलवायु का अत्यधिक प्रभाव रहा है।

मरु प्रदेश की ऐतिहासिक परम्परा प्रागैतिहासिक युग से ही प्रारम्भ हो जाती है। स्थानीय लूणी नदी की प्रागैतिहासिकता और उसके तटों पर निवास करने वाले आदि-मानव का अस्तित्त्व भी प्रमाणित हो चुका है। ऐतिहासिक युग में पश्चिमी राजस्थान में विभिन्न जातियों और राजवंशों का उल्लेख मिलने लगता है, लेकिन मारवाड़ का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित इतिहास हमें राठौड़ों के प्रभुत्व काल से ही मिलता है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मारवाड़ राज्य का विशेष महत्त्व रहा है। मारवाड़ के राठौड़ शासकों ने अपनी प्रशासनिक योग्यता, सैनिक प्रतिभा और कार्यकुशलता से मुगल दरबार की राजनीति को काफी समय तक प्रभावित किया। मुगल सम्राट औरंगजेब मारवाड़ के शासक जसवन्तसिंह प्रथम से अत्यधिक प्रभावित था। मुगलों के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों के कारण मारवाड़ का आर्थिक जीवन तथा व्यवस्थाएँ मुगलों से क़ाफी प्रभावित रही।



प्राचार्य
स्व.पं. नवल किशोर शर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय. दौसा (राज.)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

औरंगजेब की मृत्यु के उपरान्त १८वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मारवाड़ में उत्तराधिकारी को लेकर अनेक गृहयुद्ध हुए। उच्छृंखल तथा उद्दण्ड सामन्तों की गतिविधियों के कारण मारवाड़ के शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी। इस स्थिति का लाभ उठाकर मराठों ने मारवाड़ की राजनीति में हस्तक्षेप प्रारम्भ कर दिया। १९वी सदी में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के बाद तथा १८१८ ई. की अंग्रेज राजपूत संधि हुई। इससे यहाँ के राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के अतिरिक्त आर्थिक जीवन में अत्यधिक परिवर्तन हुए। १८वीं शताब्दी को मारवाड़ के इतिहास में संक्रमण काल कहा जाता है। इस समय सामन्तवाद अपने पतन की ओर अग्रसर था। ऐसे समय में जब इतनी अव्यवस्थाएँ अपने चरम पर थी, तब यहाँ के व्यापार एवं वाणिज्य का पतन होने के स्थान पर अभूतपूर्व विकास हुआ। इस समय ऐसे व्यापारिक वर्ग का उदय हुआ, जो उत्तरोत्तर काफी प्रभावशाली होता गया तथा राजाओं को सामन्तों के विरुद्ध आर्थिक सहायता प्रदान करने लगा।

१९वीं शताब्दी की अर्थव्यवस्था, भारतीय आर्थिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव को इंगित करती है। सामान्यतः यह माना जाता है कि मुगल साम्राज्य के विघटन के साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था का पतन प्रारंभ हो गया था, किन्तु केन्द्रीय शक्ति के कमजोर होने पर क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं में संगठन एवं मजबूती आई। मनसब राज्यों की केन्द्र पर आर्थिक निर्भरता मुगल साम्राज्य के विघटन के साथ ही समाप्त हो गई तथा अब उसका सम्पर्क नई ब्रिटिश अर्थव्यवस्था से होने लगा। परिणामतः क्षेत्रीय राज्यों को स्वयं की सुरक्षा एवं विकास हेतु अपने क्षेत्र के आर्थिक संसाधनों को टटोलने हेतु बाध्य किया। वतन जागीरें अब स्वतंत्र इकाइयों के रूप में परिणति हो गई थी। इन शासकों के लिए अब यह आवश्यक हो गया था कि ऐसे ढांचों का निर्माण करें जो आर्थिक गतिविधियों को संरक्षित कर सकें।

धरातल एवं जलवायु के अन्तरों के आधार पर राजस्थान को चार प्रमुख भागों में बाँटा गया है-उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश, मध्वर्ती अरावली पर्वतीय प्रदेश, पूर्वी मैदानी प्रदेश तथा दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश। उद्योग-धन्धों के लिए आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति हेतु भौगोलिक कारक ही उत्तरदायी होते है। उदयपुर में इमारती लकड़ी की बहुतायत के कारण फर्नीचर व खिलौना उद्योग उन्नत थे। डूंगरपुर, झालावाड़, सिरोही में महुआ के पेड़ अधिक संख्या में होते थे। अतः वहाँ शराब बनाने का उद्योग विकसित हुआ। अरावली पर्वतमाला को राजस्थान में खनिजों का अजायबघर कहा जाता है। इस क्षेत्र के आस-पास पत्थर उद्योग, लोहे के हथियार, बर्तन बनाने के उद्योग आदि विकसित हुये। पानी की उपलब्धता ने भी उद्योगों के विकास को प्रभावित किया। भीलवाड़ा में प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध था अतः



प्राचार्य
स्व.पं. नवल किशोर शर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दौसा (राज.)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

यहाँ वस्त्र उद्योग विकसित हुआ जिसके कारण यह वस्त्र नगरी कहलाया। इसी प्रकार जयपुर के समीप बहने वाली दूढ़ नदी के कारण सांगानेर कस्बे में कपड़ों की रंगाई-छपाई का कार्य विकसित हुआ। इस प्रकार पश्चिमी राजस्थान किन-किन उद्योगों का विकास हुआ इसका अध्ययन इस लघु शोध-प्रबन्ध में किया जायेगा।

उद्योगों का संगठन तथा कारीगरों का राजस्थान में स्थानापन्न में विभिन्न व्यवसायों में संलग्न दस्तकार जातियों का उल्लेख किया जायेगा। दस्तकार वर्ग में प्रमुखतः लुहार, सुनार, बढ़ई, चमार, छीपा, रंगरेज, लखेरा, चूड़ीगर, ठठेरा, जुलाहा, पिंजारा, पटवा, शोरगर, गंधी, गवारिया, कारीगर, संगतराश, तेली, कलाल, कुम्हार, दर्जी, सिकलीगर, मीनाकार, खारवाल आदि जातियों तथा उनके काम आने वाले औजारों एवं उनके हुनर का वर्णन प्रस्तुत किया जायेगा। दस्तकार वर्ग के जाति आधारित संगठन का आधार उनका वंशानुगत व्यवसाय होता था। शासक वर्ग दस्तकार वर्ग को विभिन्न सुविधाएँ प्रदान करते थे।

राजस्थान के समीपस्थ प्रान्तों से भी 19वीं शताब्दी में कई दस्तकार जातियाँ यहाँ आकर बस गई थी। राजस्थान के शासकों ने उन्हें करो में रियायत एवं कई अन्य सुविधाएँ प्रदान की। इस प्रकार दिल्ली, आगरा, कन्धार, लाहौर, मुल्तान आदि से दस्तकार वर्ग का राजस्थान में आगमन का वर्णन भी इस लघु शोध-प्रबन्ध में करने का प्रयास किया जायेगा।

प्रमुख ग्रामीण एवं शहरी उद्योग एवं उनकी विनिर्मित तकनीक में सर्वप्रथम प्रमुख ग्रामीण उद्योगों का वर्णन किया जायेगा जिनमें शराब बनाने का उद्योग, खाद्य तेल उद्योग, बुनाई उद्योग, काष्ठ उद्योग, गुड़ उद्योग, मूंज उद्योग, पत्तल उद्योग, चमड़ा उद्योग, मिट्टी के बर्तन बनाने का उद्योग आदि के साथ ही शहरी उद्योगों में वस्त्र उद्योग, धातु उद्योग, लाख उद्योग, कागज उद्योग, आभूषण उद्योग व मीनाकारी, कुट्टी का काम, ब्ल्यू पॉटरी, पत्थर उद्योग, नमक उद्योग आदि का वर्णन किया जायेगा।

उद्योगों की वित्तीय व्यवस्था एवं औद्योगिक उत्पादों की विपणन व्यवस्था में उद्योग एवं दस्तकारों को वित्त उपलब्ध करावाने वाले बोहरा व कोठीवालों का उल्लेख किया जायेगा। कोठीवाल बड़े सेठ थे जो व्यापारियों व राज्य सरकार को ऋण उपलब्ध करवाते थे तथा बोहरा छोटे बैंकर थे उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में राजस्थान में रेल मार्गों के निर्माण ने उत्पादित वस्तुओं की विपणन व्यवस्था को और गति प्रदान की।

दस्तकार वर्ग की संयुक्त परिवार प्रणली, संस्कार, विवाह, नाता प्रथा, रहन-सहन, नारी की स्थिति, आर्थिक दशा व दस्तकारों की ऋणग्रस्तता आदि का वर्णन किया जायेगा। उन्नीसवीं



प्राचार्य
स्व.पं. नवल किशोर शर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दौसा (राज.)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

वर्षा में पड़ने वाले अकाल से दस्तकार वर्ग को किसानों से मिलने वाले पोटिया बंद हो गया था जबकि उन्हें तेलघाणी, रेजा रंगाई आदि कर पहले की भाँति ही चुकानी पड़ते थे।

उद्योगों को राजकीय संरक्षण, सीमा शुल्क एवं कर प्रणाली पश्चिमी राजस्थान के शासकों द्वारा उद्योगों को दिये जाने वाली रियायते कर में छूट, सरकारी संरक्षण आदि का उल्लेख किया जायेगा। यहाँ के शासकों ने दस्तकारों को, साहूकारों एवं मजाहनों के शोषण से बचाने के भी विभिन्न प्रयास किये।

इस प्रकार इस लघु शोध प्रबन्ध में 19वीं शताब्दी के उद्योग व्यापार एवं दस्तकार वर्ग की स्थिति का वर्णन प्राथमिक स्रोतों तथा द्वितीय स्रोतों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा।

पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में सिंचित कृषि तथा आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार को प्रोत्साहित करने की नीति की स्थापना अनिवार्य थी क्योंकि इनका विकास करों में वृद्धि में सहायक सिद्ध हो सकता था। नवीन व्यापारिक मार्गों की स्थापना, शासकों द्वारा व्यापारिक संरक्षण की नीति ने एक सुव्यवस्थित आर्थिक ढांचे को जन्म दिया। शाह, साहूकार, सेठ, महाजन, बिचौलियें, बंजारें, चटवाल आदि व्यापारिक वर्गों के उदय ने आर्थिक संरचना एवं ढांचे में क्या-क्या परिवर्तन स्थापित किये एवं इस समय दस्तकार वर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति कैसी थी, इन सभी समस्याओं का समालोचनात्मक विश्लेषण इस लघु शोध-प्रबन्ध में करने का प्रयास किया जायेगा।

प्राचार्य
स्व.पं. नवल किशोर शर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दौसा (राज.)

वीरेन्द्र सिंह
डॉ० वीरेन्द्र सिंह चौधरी
व्याख्याता – इतिहास
प० न० कि० शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दौसा



Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Annexure - V

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADUR SHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI – 110 002

## Utilization certificate

Certified that the grant of Rs. 1,30,000 = 00 (Rupees ONE LACK THIRTY THOUSAND ONLY only) received from the University Grants Commission under the scheme of support for Minor Research Project entitled PASHMI RAJASTHAN ME PRAMUKH UDHYOG VYAPAR AVAM DUSTAKAR VARG KI ISTHITI KA EK ADHYAYAN (JAIPUR SAMBHAG KE VISHESH SANDARBH ME) vide UGC letter No. F. MH-20/3040/3/XII/14-15/CRO dated 14th Feb 2015 has been fully utilized for the purpose for which it was sanctioned and in accordance with the terms and conditions laid down by the University Grants Commission.

वीरेन्द्र सिंह
SIGNATURE OF THE PRINCIPAL INVESTIGATOR

PRINCIPAL 24/5/17
प्राचार्य
प० नवल किशोर शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा

STATUTORY AUDITOR
(Seal)
B. L. SHARMA & CO. DAUSA Chartered Accountants



Scanned by CamScanner